वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

"चिंतक और चिन्तन"
!! पंडित मदन मोहन मालवीय का प्रयोगात्मक शिक्षा दर्शन !!

डॉ. दिनेश कुमार मिश्र
सह. प्राध्यापक (शिक्षा शास्त्र)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

भारत की इस पुण्य धरा में अनेकों विद्वान ऐसे हुए जिनके अथक् परिश्रम एवं सामाजिक कल्याण हेतु समर्पण से समाज को सही दिशा प्रदान की है। इस पंक्ति में राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गॉधी जी का नाम उल्लेखनीय है, इन मॉ भारती के विद्वत् सुपुत्रों ने औपनिवेशिक शिक्षा पद्धति का विरोध करते हुए भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति को निरन्तर प्रगतिशील बनाये रखने का सार्थक प्रयास किया। तत्कालीन विद्वत् श्रृंखला में पंडित मदन मोहन मालवीय जी का स्थान अग्रगण्य है, जिन्होंने न सिर्फ अपनें शिक्षा दर्शन को विचारों तक सीमित रहने दिया बल्कि अपने विचारों को एक प्रयोगात्मक रूप प्रदान कर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कर डाली, जो आज भी भारतीय शिक्षा का गौरव बना हुआ है। पंडित जी की प्रसंशा में गॉधी जी उनको भारत भूषण कहते थे, तथा स्वयं को उनका पुजारी तक कह डाला, पंडित जी की प्रतिभा किसी एक क्षेत्र में नहीं थी बल्कि वह कुशल वक्ता, प्रदीप्त पत्रकार, विधि ज्ञाता, कुशल शिक्षक, सफल राजनेता, महान शिक्षाविद्, दार्शनिक, साहित्यकार, कथावाचक व अनन्य राष्ट्रभक्त भी थे। उनका वेशभूषा, रहन–सहन व आचार–विचार तो पूर्णतः विशुद्ध भारतीय था, परन्तु उनके सामाजिक दृष्टिकोण को यदि विश्लेषित किया जाए, तो वे आधुनिक, प्रगतिशील व व्यवहारिक राष्ट्रवादी विचारक के रूप में द्ष्टिगत होते है। पंडित जी का जीवन बहुआयामी था, जिसमें मानवतावाद, वस्तुवाद, प्रयोगवाद, आदर्शवाद व सनातन परम्परा को अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

प्रस्तुत लेख के माध्यम से वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में पं. मदनमोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिता जानने का यत्न किया गया है।

पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा मॉडल **'सा विद्या या विमुक्तेय'** पर केन्द्रित था, उनका मानना था कि स्वार्थ परायगता व मानसिक संकीर्णताओं की जगह सत्य त्याग एवं समर्पण की भावना का विकास ही मुक्ति है तथा शिक्षा ऐसी हो जिसमें विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व भावनात्मक पक्षों को पुष्ट करें। पंडित जी उच्च शिक्षा में तक्षशिलाा व नालन्दा विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं की कल्पना करते थे जो वर्षो तक भारतीयों की शिक्षा एवं संस्कृति के गौरव का केन्द्र रहे, परन्तु वे यह भी चाहते थे कि व्यवसायिक दृष्टि से उसमें पश्चिमी शिक्षा के वैज्ञानिक प्रणाली का समन्वय होना भी अवश्यक है, डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन जी ने कहा कि मालवीय जी भारत के पुराने पॉच हजार वर्ष के अतीत का अनुसरण नहीं, बल्कि नवीन युग की प्रगतिशील शिक्षा व विज्ञान के ज्ञान से भारतवासियों को समृद्ध करना चाहते है तथा प्रत्येक नागरिक को प्रेरित कर मानव सेवा से जोड़ना चाहते है, अतएव उन्होने सृष्टि के समस्त दिशाओं से आने वाले उत्तम विचारों का अद्भुत समन्वय कर विश्वविद्यालय में कला व विज्ञान की

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

सर्वतोन्मुखी शिक्षा एवं अन्वेषण पर जोर दिया। प्रयोजनवादी विद्वानों की तरह ही वे छात्रों में सामाजिक परिस्थितियों में संघर्ष करने की शक्ति को उद्दीप्त करना चाहते थे। वे अर्थकारी शैक्षिक अवधारणा के प्रशंसक थे, जिसके विद्यार्थी को हाई स्कूल से ही क्रिया–आधारित, व्यावसायिक अर्थपरक शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाना आवश्यक समझते थे, इसके माध्यम से विद्यार्थी को उत्पादन और आपूर्ति की व्यवस्था से जोड़कर उसके अन्दर आत्मबल विकसित कर स्वावलम्बी बनाना चाहते थे, इसकी अभिव्यक्ति उनके द्वारा स्वयं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में की गई, उन्होने कहा कि भारत वर्ष की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा अशिक्षा है इसलिए हे मेरे शिक्षा प्रेमियों मेरे इन हाथों में धन देकर मेरे कन्धों में शिक्षा का भार डालदो, मैं आपके समक्ष प्रतिज्ञा लेता हूँ, कि कुछ ही वर्षों में मैं इस पवित्र धरा से अशिक्षा को समाप्त कर नवयुवकों में उच्च नागरिकता, मानवता व ऐसे प्रेम भाव का विस्तार करूँगां, जिससे एक नवीन प्रगतिशील राष्ट्रीयता के हर्ष का उदय होगा, **(दीक्षांत भाषण 1929 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)**। मालवीय जी दिल मे देश के प्रति उच्च कोटि की भक्ति का भाव था, जिसका प्रमाण उनके प्रत्येक कार्य से प्राप्त होता है उनके लिए राष्ट्र गौरव मे वृद्धि व नागरिकों की उन्नति ही देश सेवा के प्रमुख लक्षण थे। वे भाषा, जाति, सम्प्रदाय व क्षेत्रीयता के आधार पर भारतीय नागरिकों के मध्य बढ़ती दूरियों को समाप्त कर भारत की सम्प्रभुता व अखण्डता को अक्षुण्य रखते हुए एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। साथ ही प्रत्येक नागरिक को शिक्षा रूपी अमोध अस्त्र प्रदान करना चाहते थे, जिसमें वे जीवन के समस्त संघर्षो व कठिनाईयों से निजात पा सके, शायद इसीलिए उन्होंने शैक्षिण संस्थाओं का निर्माण ही अपने जीवन का ईष्ट लक्ष्य बना लिया, इस नेक कार्य के लिए व किसी से भी दान लेने में संकोच नहीं करते थे और दान से प्राप्त पाई–पाई को स्वयं के जीवन से अछूता रख शैक्षिक संस्थाओं के निर्माण व विकास के कार्यो में व्यय करते थे।

(1) हिन्दू बोडिंग हाउस

विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्राप्ति में छात्रावास का क्या महत्व है ये मालवीय जी बखूबी समझते थे, इसीलिए 1901 में इलाहावाद विश्वविद्यालय के म्योर सेट्रल कालेज में विद्यार्थियों के लिए 230 कमरों के विशाल छात्रावास का निर्माण उनके द्वारा करवाया गया, जो उनके जीवन का पहला सार्वजनिक संस्थान है, जिसके निर्माण में 2,50,000 रूपये का खर्च आया इसमें से एक लाख राशि वर्तमान प्रांतीय सरकार द्वारा प्राप्त हुई शेष राशि मालवीय जी ने चन्दा करके इकठ्ठा किया। प्रारम्भ में इस छात्रावास को मैकडॉनल्ड हिन्दू बोर्डिग हाउस के नाम से जाना जाता था, परन्तु कालान्तर में मालवीय जी के देहावसानों परान्त इसका नाम मालवीय हिन्दू बोर्डिग हाउस रखा गया, ये वही छात्रावास है, जिसमें प्रख्यात इतिहासकार पं. सुन्दरलाल ने निवास किया, चन्द्रशेखर आजाद, पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर जी भी इसी छात्रावास से अपनी राजनीति का प्रारम्भ किया, तत्कालीन क्रान्तिकारी लोगों व संगठनों के भी रूकने का ये प्रमुख स्थान था।

(2) गौरी पाठशाला

मालवीय जी ने स्वयं के निजी जीवन से लेकर सार्वजनिक जीवन में भी मातृशक्ति के महत्व को स्वीकार ही नहीं किया अपितु इसको भव्यता प्रदान करने का भी कार्य पूरे मनोभाव से किया। वे कहते थे कि स्त्री–शक्ति काम्या तथा भोग्या की जगह साम्या और आराध्या होना चाहिए, तभी समाज और देश की उन्नति सम्भव होगी। वे शासन के समक्ष भी स्त्री–शक्ति के हित के मुद्दे उठाते थे फिर चाहे वो देवदासी प्रथा हो या फिर कोई अन्य कुरीति, इसी कार्य को और अधिक गति देने के लिए मालवीय जी ने 1904 में

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन एवं बालकृष्ण भट्ट जी के प्रबल सहयोग से गौरी पाठशाला की स्थापना की जो वर्तमान में उच्चतर माध्यमिक महाविद्यालय के रूप में जाना जाता है।

(3) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पवित्र पावन धरा काशी में काशी और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध शिक्षा का मन्दिर है जिसकी स्थापना 1916 में राष्ट्रवादी एवं शिक्षाविद पं. मदन मोहन मालवीय जी के द्वारा डॉ. एनीवेसेट जैसी महान विभूतियों के सहयोग से करवाया गया था। जो कि संसदीय कानून – 1915 के अनुसार स्थापित हुआ, इस विश्वविद्यालय ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी अहम भूमिका निभाई, साथ ही वर्तमान समय भी इस विश्वविद्यालय का इसके विद्यार्थियों का व इसके शैक्षिक योगदान का राष्ट्र की प्रगति में अहम योगदान है।

मालवीय जी के शैक्षिक विचार प्रत्येक स्तर की शिक्षा व्यवस्था हेतु विचारणीय है। वे प्रारम्भिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने के पक्षधर थे तथा किसी भी तरह से उर्दू, फारसी था अन्य विदेशी भाषा की बाध्यता को अस्वीकार करते थे। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में विद्यार्थी को अर्थोपार्जन व व्यवसायिक शिक्षा से जोड़ना चाहते थे उनका कहना था की माध्यमिक शिक्षा विश्वविद्यालय शिक्षा का आधार है इसलिए विद्यार्थी को कक्षा 6 से ही धर्म, कला, विज्ञान, ज्ञानार्जन, प्रद्यौगिकी व समाजोत्थान के कार्यों से जोड़ना आवश्यक है जिससे वो अपने व्यवहारिक जीवन की शुरूआत कर सके। वे उच्च शिक्षा में युवाओं को चेतना के पॉचों आयाम कला, दर्शन ज्ञान–विज्ञान, आध्यात्मिकता को पोषित करना चाहते थे साथ ही अद्यौगिक आत्मनिर्भरता के पक्षधर भी थे।

मालवीय जी कहते थे वर्तमान उच्च शिक्षा पद्धति के ऊपर सबसे बृहद अभियोग यह है कि विद्यार्थी बीस वर्षों तक विद्यालयों व विश्वविद्यालयों से तमाम शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अपने परिवार का भरण–पोषण करने में असमर्थ रह जाता है। अतएव ये कहने में मुझे लेशमात्र भी सॅकोच नहीं है कि हमारी शिक्षा पद्धति में निश्चय ही कमी है और इसको परिवर्तित कर समाजोनुकूल बनाना आवश्यक है। हमारी विपन्नता का कारण हमारे नवयुवकों का तकनीकी में विछडापन व उनके अन्दर सार्वजनिक सेवा का आभाव है और अपनी संस्कृति के प्रति उदासीनता भी, मालवीय जी विश्वविद्यालय को बहु–आयामी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बनाकर देश के नवयुवकों को जीवन के प्रत्येक भाग को प्रशिक्षित करना चाहते थे, ताकि युवा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों फिर वो चाहे कला, विज्ञान, उद्योग, वाणिज्य व सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर देश की प्रगति का कर्णधार बन सके।

मालवीय जी ने मार्च 1915 में केन्द्रीय विधान परिषद के समक्ष विश्वविद्यालय विधेयक शिक्षा सदस्य के रूप में कहा कि ''विश्वविद्यालयों का कार्य संकुचित सम्प्रदायवाद को बढ़ावा देना नहीं है अपितु युवाओं के अन्दर उदारता और मानसिक स्वतन्त्रता का भाव पैदा करना है तथा उनके मस्तिष्क में ऐसी धार्मिक भावना को जाग्रत करना है जिससे मुनुष्य एवं मनुष्य के बीच भाईचारा उत्पन्न हो सके, धर्म के यथार्थ ज्ञान से उनके अन्दर विशाल ह्रदयता का भाव जाग्रत होगा, ईश्वर से प्रेम की भावना बढ़ेगी और घृणा का भाव स्वतः ही मिट जायेगा।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

निष्कर्ष

इसलिए यह कहना सर्वथा तर्कसंगत होगा कि पंडित मदन मोहन मालवीय भारतीय शिक्षा में अनमोल रत्न व स्वयं एक संस्था थे उन्होने शिक्षा और समाज के मध्य अद्भूत संतुलन स्थापित कर अपने शिक्षा दर्शन को प्रयोगात्मक रूप प्रदान किया जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में आज भी अपना परचम विश्व स्तर पर लहरा रहा है।

उन्होने ऐसी शैक्षिक संकल्पना स्थापित की जिसके माध्यम से युवाओं में सहजीविता व सौहार्द के भाव का संचार हो सके, साथ ही शिक्षा और कौशल प्राप्त कर अपनी आजीविका एवं व्यवहारिक जीवन की कठिनाइयों का समाधान प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। साथ ही दशे के बहुआयामी विकास में अपना सार्थक योगदान कर स्वयं भी समाज में सम्मान प्राप्त कर सकें। अतएव वर्तमान शैक्षिक व अन्य वैश्विक परिस्थितियों में उनके प्रत्येक विचार व शिक्षा दर्शन सर्वथा उपयोगी प्रमाणिक व प्रासंगिक है।

संदर्भ

(1) तिवारी उमेश दत्त (1988) ''भारत भूषण महामना मदन मोहन मालवीय'' बी.एच.यू.
(2) वर्मा ईश्वर प्रसाद (1967) ''मालवीय जी के सपनों का भरत'' किताब घर, गॉधी नगर, दिल्ली पृष्ठ सं.–177
(3) अग्रवाल वासुदेश शरण (1998) ''मालवीय जी के लेख और भाषण'' काशी विन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
(4) वर्मा बी.पी. (1998) ''आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन'' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा, पृष्ठ सं. –378
(5) पाण्डेय रामशकल पाण्डेय (2006) ''मालवीय जी के लेख'' वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन पृष्ठ सं. –192
(6) लाल मुकुट विहारी (1978) ''मदन मोहन मालवीय जी का जीवन और नेतृत्व, तारा प्रकाशन वाराणसी पृष्ठ सं.–36
(7) पाण्डेय विश्वनाथ (2014) ''महामना मदन मोहन मालवीय जी का विद्यार्थियों के लिए संदेश पृष्ठ सं. –19
(9) मालवीय गिरिधर (2007) ''मदन मोहन मालवीय एक जीवन परिचय'' वाराणसी प्रकाशन, पृष्ठ सं. 26 से 28